बुद्धवर्ष २५४५, आश्विन पूर्णिमा, २ अक्तूबर, २००१ वर्ष ३१ अंक ४

धम्मवाणी

समाहितो सम्पजानो, सतो बुद्धस्स सावको।
वेदना च पजानाति, वेदनानञ्च सम्भवं॥
यत्थ चेता निरुज्झन्ति, मग्गं च खयगामिनं।
वेदनानं खया भिक्खु, निच्छातो परिनिब्बुतो॥

– सं. नि. २.४.२४९

बुद्ध का श्रावक (साधक) जो समाहित है, सजग है (सच्चाई को) प्रज्ञापूर्वक संपूर्णतया जानने वाला है, वह (शारीरिक) संवेदना को भली प्रकार (प्रज्ञापूर्वक) जानता है - संवेदनाओं की उत्पत्ति को, जहां ये निरुद्ध होती हैं और (संवेदनाओं के) क्षयगामी मार्ग को भी (जानता है)। संवेदनाओं के क्षय से साधक तृष्णा-रहित हो परिनिर्वाण पा लेता है।

पूज्य गुरुजी की नेपाल, थाईलैंड एवं म्यंमा यात्रा

गत २६ अप्रेल को पूज्य गुरुजी और माताजी जब मुंबई से चल कर काठमांडू के हवाईअड्डे पर उतरे तो वहां का विशिष्ट अतिथि लाउंज (विशेष अनुमति से) स्थानीय साधकों, ट्रस्टियों, पत्रकारों और फोटोग्राफरों से भरा हुआ था। सामान उतरने तक लोग प्रश्नोत्तर करते हुए फोटो खिंचवाने में अपना सौभाग्य अनुभव कर रहे थे। अगले दिन स्थानीय पत्रों में उनके नेपाल पहुँचने के स्वागत का समाचार छपा।

उनकी नेपाल यात्रा का मुख्य उद्देश्य आवश्यक साहित्य सृजन ही था परंतु जब वे किसी केंद्र पर हों और स्थानीय साधकों तथा अन्य लोगों को इस प्रकार जानकारी प्राप्त हो जाय तब उनसे मिलने और धर्मश्रवण की जिज्ञासा होनी स्वाभाविक है। यद्यपि नियम यह बना कि वे सप्ताह में एक दिन, केवल रविवार को ही मिल सकेंगे ताकि लेखन-कार्य में बाधा न हो। ऐसा ही हुआ। फिर भी कुछ विशेष अतिथियों को समय देने के अतिरिक्त कुछ एक प्रवचन और केंद्र पर लगे शिविरों की विपश्यना, मंगल मैत्री और मैत्री के दिन साधकों से मिलने के लिए समय देना ही पड़ा। अनेकों के लाभार्थ रेडियो और टेलीविजन को भी समय देना आवश्यक समझा गया।

उनके वहां रहते हुए नेपाली राजपरिवार पर जिस महाविपत्ति का कहर बरपा, जिससे सारा विश्व स्तब्ध रह गया। ऐसे समय अराजकता फैलने की संभावना प्रबल थी परंतु धर्म-तरंगों ने अपना काम किया और भगवान बुद्ध की जन्मभूमि बर्बादी के महाविनाश से उबर सकी। [अभी कुछ दिनों पूर्व प्राप्त सूचना के अनुसार वर्तमान नेपाल नरेश महाराजाधिराज ज्ञानेन्द्र बीर बिक्रम शाह ने नेपाल के विपश्यनाचार्य डॉ. रूप ज्योति को पार्लियामेंट का सदस्य मनोनीत किया है और वे उनके कार्य व सुझाओं से बहुत प्रसन्न हैं। इस सूचना पर आशीर्वाद देते हुए पूज्य गुरुजी ने आशा व्यक्त कि इससे नेपाल की पावन धरती का मंगल ही होगा।]

१२ जून को वे काठमांडू से थाईलैंड होते हुए बर्मा पहुँचे। यहां पहुँचने के पूर्व ही स्थानीय पत्रों में उनके आगमन की सूचना छप चुकी थी। हवाई अड्डे पर सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालु उपासक, उपासिकाएं तथा कुछ एक अन्य गण्यमान्यजन पहले से प्रतीक्षारत थे। उन सब को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए एक निर्धारित स्थान पर पूज्य गुरुजी व माताजी को तुरंत बाहर लाकर बैठाया गया और आप्रवासन की अन्य औपचारिक ताएं पीछे से पूरी करते हुए हम बाहर आए।

बर्मा आते हुए बीच में पूज्य गुरुजी को ८-१० दिन का थाईलैंड का कार्यक्रम था। परंतु उस समय वहां की राजकुमारी महामहिम गल्यानी वधना विदेशयात्रा पर थीं। अतः काठमांडू रहते संदेश मिला कि उनके थाईलैंड वापस लौटने तक कार्यक्रम को आगे बढ़ाया जा सके तो वे भी पूज्य गुरुजी को सुन सकेंगी। इसे स्वीकार करते हुए कार्यक्रम २५ जून से ४ जुलाई तक के लिए पुनर्निश्चित किया गया।

२४ जून को जब पूज्य गुरुजी थाई एयरवेज से बैंकाक हवाईअड्डे पर उतरे तो वहां शाही अधिकारियों सहित एयरलाइन के सभी क्रू मेम्बर्स पूज्य गुरुजी का भावभीना स्वागत करते हुए उनके विशिष्ट अतिथि-कक्ष में ले गए। वहां फूल-मालाएं अर्पित करते हुए धर्म के दो शब्द बोलने का आग्रह किया और पूज्य गुरुजी ने उनके आग्रह को स्वीकार करते हुए अपनी मंगल मैत्री प्रदान की। तत्पश्चात बैंकाक शहर जाने के लिए कतारबद्ध शाही अंदाज में भूयान तक लाकर उन्हें विदाई दी गयी।

यहां के कार्यक्रमों में उल्लेखनीय रहे – स्थानीय चूलालांगकोर्न यूनिवर्सिटी में पूज्य गुरुजी का प्रवचन, 'एम.एल. मणिरत्नम बुनांग धम्म सोसायटी फंड' के पंडितों के साथ परिचर्चा और फिसनुलोक (विष्णुलोक) के नवनिर्मित विपश्यना केंद्र 'धम्म आभा' को मंगल मैत्री एवं स्थानीय स. आचार्यों, साधकों तथा ट्रस्टियों एवं व्यवस्थापकों से बातचीत, प्रश्नोत्तर एवं उन्हें मार्गदर्शन।

मणिरत्नम धम्म सोसायटी (एम.डी.एस) ने थाईलैंड की राजकुमारी के कुलाधिपतित्व और संरक्षण में रोमन लिपि में विश्व स्तर के तिपिटक प्रकाशन का बीड़ा उठाया है जो कि छट्ठ संगायन पर आधारित होगा। विपश्यना विशोधन विन्यास ने बरमी लिपि में उपलब्ध छट्ठ संगायन को आधार बना कर संपूर्ण तिपिटक देवनागरी एवं बरमी लिपि में भारत तथा ताईवान की 'द कारपोरेट बाडी ऑफ द बुद्ध एजुकेशनल सोसायटी' के सहयोग से प्रकाशित करवा दिया है। बरमी लिपि का संस्करण शीघ्र ही ताईवान से बर्मा आ रहा है जो कि पूज्य

गुरुजी अपने हाथों म्यंमा सरकार को अर्पित करेंगे। विन्यास ने तिपिटक के १४८ ग्रंथों के अतिरिक्त इससे संबंधित अन्य ग्रंथों व शब्दकोषों को मिला कर कुल २१७ ग्रंथों को सीडी में निवेशित कर रखा है। इसे आधार बना कर एम.डी.एस. के पंडितों ने जिस रोमन संस्करण के प्रकाशन का बीड़ा उठाया है उसे पूज्य गुरुजी ने मंगल मैत्री प्रदान की और पंडितों ने इस बात का आश्वासन दिया कि यदि कहीं कोई सुधार की आवश्यकता हुई तो वे उसे विन्यास को अवश्य सूचित करेंगे ताकि हमारी सीडी के अगले संस्करण में उसे सम्मिलित किया जा सके।

२८ जून को चूलालंगकोर्न यूनिवर्सिटी और धम्म सोसायटी फंड की ओर से पूज्य गुरुजी को प्रवचन के लिए आमंत्रित किया गया, जो कि थाईलैंड की राजकुमारी गल्यानी वधना के सभापतित्व में संपन्न हुआ। 'विपश्यना साधना और तिपिटक' विषय पर हुआ उनका प्रवचन सरकारी टेलीविजन के चैनल नं. ५ व अन्य चैनलों पर थाई अनुवाद सहित पूरे विश्व में प्रसारित किया गया। पूज्य गुरुजी ने अपने अनुभवों का उल्लेख करते हुए बताया कि किस प्रकार इस साधना ने उन्हें तिपिटक की ओर आकर्षित किया और बुद्धवाणी के अध्ययन से अनेक प्रकार की गलतफहमियां दूर हुईं। तिपिटक के अध्ययन ने साधना की और गहराइयों में जाने के लिए प्रेरणा और बल प्रदान किया और सयाजी ऊ बा खिन की बताई हुई विधि के आधार पर किया जा रहा ध्यान अधिक स्पष्ट होता गया। अपने प्रथम दस दिवसीय शिविर के अनुभव बताते हुए उन्होंने कहा – ...

"मुझे नाशिका के नीचे, ऊपर वाले होठ के ऊपर सारा ध्यान एक छोटे से भाग में बिल्कुल स्थिर रखने के लिए कहा गया जो कि **परिमुखं सतिं उपट्ठपेत्वा...** जो कि तिपिटक के अनुसार **नासिकग्गे.. उत्तरोट्ठस्स वेमज्झप्पदेसे** ही है। मैं इस छोटे-से स्थान पर सारा ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करता रहा और साथ-साथ प्रत्येक सहज स्वाभाविक सांस की जानकारी बनाए रखने का भी। एक-दो दिन के सतत प्रयास के बाद मैंने देखा कि सांस की गति धीमी, छोटी और सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होती जा रही है। अपने स्वानुभव से जाना कि ध्यान का केंद्रबिन्दु जितना छोटा और सूक्ष्म होता है, मन स्वतः उतना ही सूक्ष्म और संवेदनशील होता जाता है। धीरे-धीरे मन इस छोटे से स्थान पर होने वाली (वेदना) संवेदनाओं को अनुभव करने लगता है। यह वेदनानुभूति दूसरे और तीसरे दिन बहुत स्पष्ट महसूस होने लगी।

चौथे दिन जब साधना की मुख्य विधि **'विपश्यना'** सिखाई गयी तो यह देख कर सुखद आश्चर्य हुआ कि सिर के सिरे से पांव की अंगुलियों तक सारे शरीर में संवेदनाओं की अनुभूति होने लगी। इस संवेदना से प्रकृति के अटूट नियम उदय-व्यय की अनुभूति होने लगी। यह 'भावनामयी प्रज्ञा' थी जिसके बल पर **'अनिच्च'** (अनित्यता) का अनुभव हुआ। मेरे विपश्यनाचार्य सयाजी ऊ बा खिन के अनुसार केवल श्रद्धा से या पढ़-सुन कर चिंतन-मनन करके मान लेना **'सुतमया पञ्ञा'** या **'चिन्तनमया पञ्ञा'** है। इससे बुद्धिविलास भले हो जाय, मुक्त अवस्था नहीं प्राप्त हो सकती। भगवान बुद्ध ने **'भावनामया पञ्ञा'** को महत्त्व दिया, जो मेरे पूर्व की साधना-विधियों में बिल्कुल नहीं थी। अब समझ में आया कि अपने शरीर पर होने वाली संवेदनाओं को समतापूर्वक देख पाना बुद्ध की साधना-पद्धति की प्रमुख देन थी।

मेरे पूर्व के हिंदू विधि-विधान के अनुसार मैं इस बात पर बिल्कुल आश्वस्त था कि व्यक्ति को इंद्रियों के वशीभूत नहीं होना चाहिए। हमें बचपन से बताया गया था इंद्रियों का उनके विषयों से संपर्क होने पर इनके प्रति कभी राग द्वेष की प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए, चाहे वे सुखद हों या दुःखद। जबकि बुद्ध की सबसे बड़ी खोज यह थी कि हम बाहरी विषयों के संपर्क में आने पर ही प्रतिक्रिया नहीं करते बल्कि विषयों के संपर्क में आते ही शरीर में किसी एक प्रकार की संवेदना होती है और वह प्रिय लगती है या अप्रिय लगती है। हम उस संवेदना पर प्रतिक्रिया करते हैं। इसीलिए भगवान बुद्ध ने **पटिच्चसमुप्पाद** की व्याख्या करते हुए यह नहीं कहा कि **सळायतन पच्चया तण्हा**। बल्कि प्रकृति के नियमों का गहराई से निरीक्षण करके कहा, **सळायतन पच्चया फस्स, फस्स पच्चया वेदना, वेदना पच्चया तण्हा**। अर्थात प्रिय के प्रति राग अथवा अप्रिय के प्रति द्वेष की प्रतिक्रिया संवेदनाओं पर आधारित है। मेरी समझ में यह बहुत स्पष्ट हुआ कि भगवान बुद्ध की यह वैज्ञानिक खोज हमें समस्या की उस जड़ तक ले जाती है जहां हम विभिन्न संवेदनाओं की अनुभूतियां करके प्रतिक्रिया करते रहते हैं। सुखद, दुःखद अथवा असुखद-अदुःखद संवेदना की अनुभूति करके हम उनके अनित्य **अनिच्च** यानी **उदयब्बय** स्वभाव को जान लें तो समझ में आने लगता है कि अरे, यह कितना क्षणभंगुर है! इसके प्रति क्या राग करें? क्या द्वेष करें? तब आसक्ति अपने आप छूटती जाती है। भगवान बुद्ध की यही बोधि थी जिसे अनुभव करते हुए मैं अत्यंत प्रभावित हुआ और मैंने पाया कि यह कोई बुद्धि-किलोल नहीं है अथवा कोई अंधविश्वासजन्य मान्यता नहीं है। यह ऐसी सच्चाई है जिसका अनुभव कोई भी कर सकता है। मैंने यह भी पाया कि भगवान बुद्ध की शिक्षा की यह सच्चाई प्रत्येक व्यक्ति द्वारा स्वानुभूति से जानने के लिए थी। यद्यपि पढ़-सुन कर चिंतन-मनन किया हुआ ज्ञान हमें प्रेरणा प्रदान करता है, मार्गदर्शन देता है। लेकिन यह भावनामयी प्रज्ञा ही है जो वस्तुतः हमारे अंतर्मन के स्वभाव शिकंजे को बदलने और तोड़ने में मदद करती है।

जैसे-जैसे मैं इस साधना में आगे बढ़ता गया, मुझे बहुत स्पष्ट समझ में आने लगा कि इन संवेदनाओं का हमारे दुःख के संवर्धन के साथ कितना गहरा संबंध है! और यही संवेदनाएं हमारी दुःख-विमुक्ति के लिए कितनी सहायक भी हैं! जब तक हम जीवित हैं संवेदनाएं हमारे साथ हैं। परंतु अनजाने में व्यक्ति हर क्षण राग या द्वेष की प्रतिक्रिया करता रहता है। बुद्ध की वैज्ञानिक विद्या 'विपश्यना' के अभ्यास से व्यक्ति **सति** – सजगता का विकास करके संवेदनाओं की अनुभूति करता है और उसी समय **सम्पजञ्ञ** यानी संप्रज्ञान के द्वारा उनके अनित्य स्वभाव को समझ कर निर्लिप्त रहना सीखता है। **आतापी** यानी तपस्वी **सम्पजानो सतिमा** रह कर इनके विकास द्वारा अपनी अनिष्टकारक राग-द्वेष की अंधप्रतिक्रिया से छुटकारा पा सकता है।

यदि बुद्ध की शिक्षा केवल यह होती कि राग मत करो, द्वेष मत करो तो वह मुझे कभी अपनी ओर आकर्षित न कर पाती। क्योंकि यह शिक्षा तो मेरे पास पहले से मौजूद थीं। लेकिन जब मुझे यह बताया गया कि तुम अपने शरीर पर होने वाली इन संवेदनाओं के प्रति राग और द्वेष के स्वभाव से छुटकारा प्राप्त करो, तो इसने मुझे बहुत आकर्षित किया। इससे यह बात बहुत स्पष्ट हुई कि शारीरिक संवेदनाओं के सहारे हम अपने अंतर्मन के उन गहन संस्कारों यानी **अनुसय किलेस** तक पहुँच सकते हैं जो कि सुषुप्त अवस्था में गहराई से पैठे हुए हैं और अंदर ही अंदर गांठों पर गांठें बांधते रहते हैं। मुझे यह भी स्पष्ट होने लगा कि ऐसी अनेक ध्यान पद्धतियां हैं जो कि केवल परित्त चित्त यानी मन के ऊपरी स्तर की सफाई तो कर सकती हैं, लेकिन **अनुसय** यानी सुषुप्त संस्कारों को छेड़ती तक नहीं। अतः अंधप्रतिक्रिया करने की पुरानी आदत कायम रहती है। ....."

विपश्यना के विश्वव्यापी होने का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि सभी प्रकार के लोगों में, सभी मान्यताओं और मतमतांतरों को मानने वाले लोगों में विपश्यना किस प्रकार फैल रही है!...

"बुद्ध के बताए अनुसार संवेदनाओं को समतापूर्वक देखना

सभी प्रकार के दुःखों से छुटकारा पाने की अचूक औषधि के समान है, जो सब के लिए समानरूप से उपयोगी है। बुद्ध-वाणी के शब्द कितने स्पष्ट हैं जब वे कहते हैं, **वेदना समोसरणा सब्बे धम्मा** –मन में जो कुछ भी उत्पन्न होता वह संवेदना के रूप में सारे शरीर में फैल जाता है। इसलिए जब हम अज्ञान अवस्था में रहते हैं तो यही संवेदना हमारे लिए दुःख उत्पन्न करने का कारण बनती है। इसके प्रति प्रतिक्रिया करते हुए हम राग व द्वेष का संवर्धन करते हैं। परंतु जब हम इन शारीरिक संवेदनाओं को जान कर तटस्थ बने रहते हैं यानी प्रतिक्रिया करना बंद कर देते हैं तब यही संवेदना हमारे मंगल का कारण बन जाती है।

यह सार्वभौमिक सत्य संसार के सभी लोगों को समानरूप से समझ में आने लगता है कि यह विद्या सब को राग, द्वेष व मोह के बाहर निकालने में सक्षम है, मंगलकारिणी है। इसीलिए यह सब के द्वारा समानरूप से ग्रहण की जाती है। ..."

२९ जून को लगभग ३०० साधक बैंकाक की 'होटल हिल्टन इंटरनेशल' के हॉल में पूज्य गुरुनी से मिले, लिखित रूप में अपने प्रश्न प्रस्तुत किये और गुरुजी से उनका उत्तर पाकर संतुष्ट प्रसन्न हुए।

३० जून को पूज्य गुरुजी द्वारा वि.वि. विन्यास द्वारा निर्मित छट्ठ संगायन सीडी वहां की राजकुमारी को भेंट दी गई, जिसे उन्होंने प्रमुख संरक्षिका होने के नाते 'धम्म सोसायटी फंड' के लाभार्थ सहर्ष स्वीकार किया। विन्यास द्वारा प्रकाशित 'अभिधम्मपिटक' का देवनागरी संस्करण पूज्य गुरुजी द्वारा वहां के संघपति को भेंट किया। उन्होंने थाईलैंड के भिक्षुसङ्घ के प्रति अपनी आदरभावना और मंगल कामनाएंभी प्रकटकीं।

१ जुलाई को पूज्य गुरुजी और माताजी थाईलैंड के फिसनुलोक में नवनिर्मित विपश्यना केंद्र "धम्म आभा" पहुँचे। फिसनु शब्द हिन्दी के विष्णु और पालि के वेण्हु (वेन्दु) से लिया गया है। हरी-भरी सुरम्य पहाड़ियों से घिरे इस केंद्र पर चित्ताकर्षक भवनों का निर्माण किया गया है, जिनकी छतें दोनों ओर ढालू हैं। इनमें आधुनिक थाई कला के दर्शन होते हैं। पूज्य गुरुजी ने केंद्र का सर्वेक्षण किया और फिर साधना कक्ष में साधकों के साथ सामूहिक साधना की।

केंद्र की कुल भूमि ६१ एकड़ है। इसकी लैंडस्केपिंग करके कहीं पानी एकत्र करने के लिए कृत्रिम ताल बनाए गए हैं और कहीं वृक्षारोपण किया गया है। जमीन पर पहले से ही अनेक बड़े फलदार वृक्ष हैं। पूर्व की ओर बांस के सघन समूहों (वेणुवन) को वैसे ही रहने दिया गया है। बगल में सीमा बनाती बरसाती सरिता का कलकल निनाद मन को मुदित करता है।

२ जुलाई को पश्चिमी थाईलैंड की प्राचीन सुवर्णभूमि के ट्रस्टियों ने पूज्य गुरुजी से भेंट की और वहां एक नए केंद्र-निर्माण की योजना रखी, जिसे स्वीकार करते हुए पुज्य गुरुजी ने उसे **"धम्म कञ्चन"** नाम से विभूषित किया। यह क्षेत्र पहले से ही घनी आबादी से सज्ज समृद्धिपूर्ण रहा है। पूर्वकाल में यहां धर्म अपनी शुद्धता के साथ चिरकालतक जीवित रहा था। हम विश्वास कर सकते हैं एक बार पुनः यहां इतिहास दुहराया जा सकेगा।

३ जुलाई को 'धम्म आभा' के ध्यान-कक्ष में पूज्य गुरुजी के साथ सामू. साधना और प्रवचन-पश्चात साधकों, ट्रस्टियों, स. आचार्यों आदि के प्रश्नोत्तर हुए। पूज्य गुरुजी ने समझाया कि किस प्रकार धर्म को अपने आचरण में उतारते हुए, धर्मपथ पर प्रगति करते हुए हम न केवल अपना कल्याण साधेंगे, बल्कि अन्य अनेकों के मंगल में सहायक बन सकेंगे।

४ जुलाई को पुनः म्यंमा के लिए प्रस्थान किया।

यहां पहुँच कर उन्होंने अपने लेखन का काम जारी रखा और हर रविवार को यांगों के विपश्यना केंद्र "धम्म जोति" पर प्रातःकाल ८ से ९ बजे की सामूहिक साधना में सम्मिलित होने के बाद साधकों से मिल कर उनके प्रश्नों के समाधान का कार्यक्रम निश्चित किया गया। यहां शांत और श्वेडगोन की पवित्र धर्मतरंगों की छत्रछाया में काम करना अत्यंत मोदकारक लगा। यहां रहते हुए स्थानीय 'थेरवादी अंतर्राष्ट्रीय यूनिवर्सिटी' में तीन दिवसीय प्रवचन का कार्यक्रम निश्चित हुआ जिसमें पूज्य गुरुजी ने सति और संप्रज्ञान के बारे तिपिटक के उद्धरणों सहित शिक्षार्थियों को बुद्ध की शिक्षा परियत्ति के साथ-साथ पटिपत्ति के अभ्यास पर बल दिया ताकि वे सही माने में भगवान की शिक्षा को न केवल समझ सकें बल्कि उसे अपने जीवन में अपना कर अनेकों के मंगल में सहायक बन सकें।

म्यंमा में लंबे प्रवास के दौरान बुद्ध और बुद्ध की शिक्षा के प्रति फैली गलतफहमियों पर प्रकाश डालने वाली जिस पुस्तक-लेखन का काम संपन्न हो रहा है, विश्वास है इसके प्रकाशन से सारे संसार का मंगल सधेगा।

यात्रा के अंत में २० सितंबर से पूज्य गुरुजी उत्तरी बर्मा के केंद्रों पर पधार कर साधकों का मनोबल बढ़ायेंगे और केंद्रों को मंगल मैत्री प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त उनके कई सार्वजनिक प्रवचनों का भी कार्यक्रम निश्चित हुआ है। इस यात्रा से लौट कर वे मुंबई लौटेंगे और शीघ्र ही यह पुस्तक प्रकाश में आ सकेगी।

इस ऐतिहासिक यात्रा के सुखद परिणाम स्वरूप सब का मंगल हो!

अस्तु!

बृहत् विपश्यना पगोडा

सभी विपश्यी साधक-साधिकाओं को बताते हुए हर्ष हो रहा है कि बृहत विपश्यना पगोडा के नींव का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। इस योजना के परिपूर्ण हो जाने पर हजारों साधक-साधिकाएं इसमें बैठकर साधना कर सकेंगे।

श्री गोयन्काजीने अपने परमपूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन की स्मृति में यह ऐतिहासिक योजना हाथ में ली है। पगोडा में हजारों साधक-साधिकाओं की सामूहिक साधना के लिए एक विशाल हॉल होगा। भगवान बुद्ध के बारे में ऐतिहासिक तथ्य और उनके सार्वजनीन और अ-सांप्रदायिक उपदेशों की जानकारी देते हुए आधुनिक तकनीकों की सहायता से निर्मित एक दर्शक दीर्घा पगोडा के चारों ओर बनेगी।

पगोडा के निर्माण में प्रयुक्त पत्थर अत्यन्त कम रख-रखाव के साथ पगोडा को शताब्दियों तक सुरक्षित रखेंगे। इस प्रकार यह भव्य योजना विपश्यना अभ्यास को दीर्घकाल तक परिशुद्ध रूप में जीवित रखने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

इस ३२५ फीट ऊंची इमारत की नींव का कार्य इस महीने पूर्ण हो चुका है। नींव का परिमाण लगभग तीन तल्लों वाले भवन जितना ऊंचा है जो बीस फीट चौडा और सीधी रेखा में देखें तो चार सौ फीट से अधिक लंबा होता है। अब तक इस नींव में छह हजार ट्रक पत्थर तथा तीन हजार ट्रक रेत का प्रयोग किया जा चुका है जो चालीस हजार घंटों में पूरा किया गया। इससे पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि वस्तुतः कितना कार्य हो चुका है।

यद्यपि इसके निर्माण की कल्पना करते ही इसकी महत्ता महसूस होने लगी थी। लेकिन इसकी विशाल भव्यता तथा आवश्यक आर्थिक स्रोत की आपूर्ति की कमी के कारण कठिनाई भी प्रतीत होने लगी थी। परन्तु इस बृहत प्रथम चरण की पूर्णता ने इस भव्य निर्माण के कार्य में एक नयी स्फूर्ति और नया उत्साह फूंक दिया है।

अब अगले चरण में परिक्रमा स्तर का निर्माण कार्य आरंभ हो चुका है। योजना का यह महत्वपूर्ण भाग विशाल साधना-कक्ष को पैंतीस फीट ऊंची दीवारों से घेर देगा। इसका अनुमानित व्यय ग्यारह करोड़ रुपए आंका गया है।

यह एक महत्वपूर्ण अवसर है जबकि इस ऐतिहासिक भव्य विपश्यना पगोडा के निर्माण में सहभागी होकर साधक-साधिकाएं अपनी पुण्यपारमी बढ़ा सकेंगे। अपनी भावना और सामर्थ्य के अनुसार शुद्ध धर्मचेतना से यदि कोई चाहे तो पगोडा और ध्यानकक्ष के निर्माण के लिए एक पत्थर ही अथवा दर्शक दीर्घा हेतु एक ईंट ही प्रदान करके अपनी पुण्यपारमी का संवर्धन कर सकता है। यह विदित हो कि एक साधक के बैठने के लिए स्थान के निर्माण का अनुमानित खर्च दस हजार रुपए आयेगा। यदि कोई चाहे तो दान-राशि को दस भागों में विभाजित कर दस महीनों तक प्रतिमाह दे सकता है। भले एक व्यक्ति के ध्यान की सुविधा ही प्रदान करे, सदियों तक इसका पुण्य संवर्धित होता जायगा।

यह योगदान आयकर के अनुच्छेद ८०-जी के अनुसार करमुक्त है। दान चेक या डिमांड ड्राफ्ट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेजा जा सकता है – **'ग्लोबल विपश्यना फाउण्डेशन'**, बैंक ऑफ इंडिया, खाता क्र. ११२४४, मुंबई. द्वारा – मे. खीमजी कुंवरजी, ५२ बांबे म्युचुअल बिल्डिंग, सर पी. एम. रोड. मुम्बई ४००००१.

धम्मसलिल के पगोड़ा का निर्माण कार्य पूर्ण

ऋषिमुनियों की तपस्थली हिमालय की गोद में स्थित धम्मसलिल, देहरादून विपश्यना केंद्र के ८० शून्यागारयुक्त पगोड़ा का निर्माण कार्य पूर्ण हो रहा है। यहां प्रथम बीस दिवसीय दीर्घ शिविर २२ अक्टोबर २००१ से आयोजित होगा। इस सुविधा संपन्न केंद्र पर गंभीर साधक सादर आमंन्तित हैं।

नए उत्तरदायित्व

आचार्य

1-2. Mr Volker Bochmann & Mrs Doris Hermann 'धम्म पदीप' (पश्चिम आस्ट्रेलिया) की सेवा

नव नियुक्तियांः

सहायक आचार्य

१. श्रीमती मंजु वैश, दिल्ली
२. श्री भरतसिंह सहवाल, अजमेर
३. श्री ओमप्रकाश शर्मा, अजमेर
४. श्री प्रभुदयाल सोनगारा, जोधपुर

दोहे धर्म के

अहो भाग्य! गुरुवर मिले, कैसे संत सुजान!
मार्ग दिखाया मुक्ति का, शुद्ध जगाया ज्ञान॥

गुरुवर! अंतर्जगत में, जगी सत्य की जोत।
हुआ उजाला, धर्म से, अन्तस ओत-प्रोत॥

अंतर की प्रज्ञा जगी, होए दूर विकार।
तन मन शीतलता जगी, गुरुवर का उपकार॥

दुर्लभ सद्गुरु का मिलन, दुर्लभ धर्म मिलाप।
धर्म मिला सद्गुरु मिले, मिटे सभी संताप॥

धन्य! धन्य! गुरुदेवजी, धन्य! बुद्ध भगवान!
शुद्ध धर्म ऐसा दिया, होय जगत कल्याण॥

काया चित्त प्रपंच से, विविध वेदना होय।
निर्विकार निरखत रहें, बुद्ध वंदना सोय॥

मेसर्स मोतीलाल बनारसीदास
• महालक्ष्मी मंदिर लेन, ८ महालक्ष्मी चैंबर्स, २२ वार्डन रोड, मुंबई-४०००२६.
-४९२३५२६, • सनस प्लाजा, शॉप ११-१३, १३०२, सुभाष नगर, पुणे-४११००२.
-४८६१९०, • दिल्ली- २९११९८५, • पटना- ६७१४४२, • वाराणसी- ३५२३३१,
• बैंगलोर- २२१५३८९, • चेन्नई- ४९८२३१५, • कलकत्ता-२४३४८७४
की मंगल कामनाओंसहित

दूहा धरम रा

जय जय जय गुरुदेवजू, जय जय क्रिपा निधान।
किंकर पर किरपा करी, हुयो परम कल्यान॥

अणजाणै भटकत फिरया, अंधियाळै री रात।
धरम जोत गुरुवर दयी, आभै उग्यो प्रभात॥

मिथ्या दरसन ग्यान को, करतो बाद-विबाद।
गुरुवर बिन चखतो कठै, सत्य धरम रो स्वाद॥

अहोभाग्य! गुरुदेवज्यू, प्रग्या दयी जगाय।
दरसन बाद-विबाद री, जकड़न दयी छुड़ाय॥

जदि सतगुरु मिलतो नहीं, धरम गंग रै तीर।
तो बस गङ्गा पूजता, कदे न पीता नीर॥

जै गुरुवर मिलतो नहीं, बरमा देस सुदेस।
तो धन कै जंजाल मँह, जीवन होतो सेस॥

मेसर्स गो गो गारमेंट्स
३१ -४२, भांगवाड़ी शॉपिंग आर्केड,
१ला माला, कालबादेवी रोड, मुंबई - ४००००२.
०२२- २०५०४१४
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) ८४०८६, ८४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४५,** **आश्विन पूर्णिमा**, २ अक्तूबर, २००१

वार्षिक शुल्क रु. २०/-, विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. २५०/-, " US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६**/७१. Regn. No. AR/NSK-46/2001,

Licenced to post **without Prepayment of postage** -- Licence number-- **AR/NSK-WP/3**
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : (०२५५३) ८४०७६
फैक्स : (०२५५३) ८४१७६
Website: www.vri.dhamma.org
e-mail: <dhamma@vsnl.com>